

# यीशु और सामरी स्त्री

(यूहन्ना 4:6-42)

6 और याकूब का कूआँ भी वहीं था। अतः यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएँ पर योंही बैठ गया। यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई। 7 इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उससे कहा, “मुझे पानी पिला।” 8 क्योंकि उसके चेले तो नगर में भोजन मोल लेने को गए थे। 9 उस सामरी स्त्री ने उससे कहा, “तू यहूदी होकर मुझे सामरी स्त्री से पानी क्यों माँगता है?” (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते।) 10 यीशु ने उत्तर दिया, “यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझसे कहता है, ‘मुझे पानी पिला,’ तो तू उससे माँगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।” 11 स्त्री ने उससे कहा, “हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कूआँ गहरा है; तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से आया? 12 क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिसने हमें यह कूआँ दिया; और आप ही अपनी सन्तान, और अपने पशुओं समेत इसमें से पीया?” 13 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा, 14 परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन् जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।” 15 स्त्री ने उससे कहा, “हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊँ और न जल भरने को इतनी दूर आऊँ।” 16 यीशु ने उससे कहा, “जा, अपने पति को यहाँ बुला ला।” 17 स्त्री ने उत्तर दिया, “मैं बिना पति की हूँ।” यीशु ने उससे कहा, “तू ठीक कहती है, ‘मैं बिना पति की हूँ।’ 18 क्योंकि तू पाँच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं। यह तू ने सच ही कहा है।” 19 स्त्री ने उससे कहा, “हे प्रभु, मुझे लगता है कि तू भविष्यद्वक्ता है। 20 हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की, और तुम कहते हो कि वह जगह जहाँ आराधना करनी चाहिए यरूशलेम में है।” 21 यीशु ने उससे कहा, “हे नारी, मेरी बात का विश्वास कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे, न यरूशलेम में। 22 तुम जिसे नहीं जानते, उसकी आराधना करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी आराधना करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। 23 परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है। 24 परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।” 25 स्त्री ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।” 26 यीशु ने उस से कहा, “मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।” 27 इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; तौभी किसी ने न पूछा, “तू क्या चाहता है?” या “किस लिये उससे बातें करता है?” 28 तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी, 29 “आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है? 30 उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री के कहने से यीशु पर विश्वास किया; क्योंकि उसने यह गवाही दी थी : ‘उसने सब कुछ जो मैं ने किया है, मुझे बता दिया।’ 41 उसके वचन के कारण और भी बहुत से लोगों ने विश्वास किया 42 और उस स्त्री से कहा, “अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है।”

इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उससे कहा, “मुझे पानी पिला।” (यूहन्ना 4:7)

यीशु ने सामरी स्त्री से सीधे-सीधे यह क्यों कहा कि “मुझे पानी पिला”?

आमतौर पर, जब हम किसी अजनबी से कुछ माँगते हैं, तो पहले अपना परिचय देते हैं, फिर सामने वाले के बारे में पूछते हैं, और उसके बाद मुद्दे पर आते हैं। लेकिन यीशु ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने अपना परिचय नहीं दिया, बल्कि सीधे काम की बात की।

यीशु ने ऐसा क्यों किया, और इससे हमें क्या सीखना चाहिए, यह हम आगे समझेंगे। वचन 6 और 8 भी हम विस्तार से आगे समझेंगे।

उस स्त्री ने उससे कहा, 'तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों माँगता है?' (यूहन्ना 4:9)

यह स्पष्ट है कि यहूदियों और सामरियों के बीच कोई संबंध या लेन-देन नहीं था। फिर भी, यीशु ने न केवल उस स्त्री से बात की, बल्कि उससे पानी भी माँगा।

इससे उन्होंने हमें सिखाया कि हमें उन लोगों से भी संवाद करना चाहिए, जिनसे पहले हमारा कोई संबंध या व्यवहार नहीं रहा। यीशु ने ऐसा करने का संदेश क्यों दिया, यह हम आगे विस्तार से समझेंगे।

यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझसे कहता है, 'मुझे पानी पिला,' तो तू स्वयं उससे मांगती और वह तुझे जीवन का जल देता।' (यूहन्ना 4:10)

ध्यान दें कि यीशु ने इस सामरी स्त्री को उत्तर दिया, जबकि कई बार जब लोगों ने उस पर आरोप लगाए—जैसे उसे ढोंगी कहना या यह कहना कि वह दुष्ट आत्मा के बल से चंगाई करता है—तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

इसका कारण यह था कि यीशु के इस उत्तर से उस स्त्री के जीवन में उद्धार आने वाला था। लेकिन यदि वह उन लोगों को जवाब देता जो सिर्फ उसे परखने और विरोध करने के लिए प्रश्न करते थे, तो उनका हृदय बदलने के बजाय और अधिक क्रोधित हो जाता।

इससे हमें यह सीखना चाहिए कि हमें तभी उत्तर देना चाहिए जब उससे किसी का उद्धार हो सकता हो या सत्य का मार्ग खुल सकता हो। यदि उत्तर देने से सिर्फ विवाद बढ़ता है, तो चुप रहना ही बेहतर होता है, चाहे लोग हम पर कितने भी बड़े आरोप क्यों न लगाएँ।

यीशु ने उत्तर में कहा, "यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती," इसका अर्थ यह है कि वह सामरी स्त्री यहोवा की व्यवस्था और उसकी इच्छाओं से पूरी तरह अनभिज्ञ थी। फिर भी, यीशु उसे समय दे रहा था। यह साबित करता है कि यीशु केवल यहूदियों के लिए नहीं, बल्कि पूरी मानवता के उद्धार के लिए आया था।

यीशु ने पहले परमेश्वर के वरदान की बात की, और फिर कहा, "यदि तू यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझसे कहता है, 'मुझे पानी पिला,' तो तू स्वयं उससे मांगती।"

यीशु ने पहले परमेश्वर के वरदान का उल्लेख किया और फिर खुद के बारे में क्यों कहा?

क्योंकि यदि कोई परमेश्वर के वरदानों को जान भी ले, लेकिन यीशु को स्वीकार न करे, तो उसका ज्ञान व्यर्थ है। पहले के समय में केवल परमेश्वर को जानना पर्याप्त था, लेकिन अब यीशु ही वह मार्ग है जो पिता तक ले जाता है (यूहन्ना 14:6)। इसलिए यीशु ने अपने बारे में भी बताया, क्योंकि अब बिना पुत्र को स्वीकार किए कोई भी परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकता।

आगे यीशु कहता है, "यदि तू जानती तो तू मुझसे मांगती।"

यीशु हमेशा कहता है, "मांगो और तुम्हें दिया जाएगा" (मत्ती 7:7)। यही कारण है कि वह उस स्त्री से कहता है कि यदि वह उसे पहचानती, तो उससे जीवन का जल मांगती।

फिर उसने कहा, "वह तुझे जीवन का जल देता।"

यह "जीवन का जल" स्वयं यीशु का पवित्र लहू है, जिसे हम पीते हैं ताकि हमें अनन्त जीवन मिले। यह वही लहू है जो क्रूस पर हमारे उद्धार के लिए बहाया गया। हालाँकि, जब यीशु यह बात कह रहा था, तब तक उसका लहू क्रूस पर नहीं बहाया गया था, लेकिन उसे पहले से पता था कि यह घटना घटित होगी। वह अपने वचनों और आत्मिक जल के माध्यम से उस स्त्री को उद्धार का मार्ग दिखाना चाहता था।

हमारे जीवन में भी ऐसा होता है—जब हम किसी अविश्वासी को थोड़ा समय देकर सुसमाचार सुनाने का प्रयास करते हैं, तो वे हजारों बहाने बनाते हैं। लेकिन यदि वे वास्तव में यह जान लें कि हम किसके सेवक हैं और उनके लिए क्या दे सकते हैं, तो वे स्वयं हमसे समय मांगेंगे।

स्त्री ने उससे कहा, "हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं और कुआँ गहरा है, तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से आया?" (यूहन्ना 4:11)

यहाँ यीशु हमें यह सिखाने की कोशिश कर रहे हैं कि जब हम परमेश्वर के नाम का प्रचार करेंगे, तो लोग हमारे बाहरी स्वरूप और सांसारिक ज्ञान के आधार पर हमारी कमियों को दिखाने का प्रयास करेंगे।

उदाहरण के लिए, यदि आप कहते हैं, "परमेश्वर के राज्य की खोज करो, उसमें तुम्हें सब कुछ मिलेगा" (मत्ती 6:33), तो एक अविश्वासी आपसे पूछ सकता है—"तुम्हारे पास तो धन-दौलत, वैभव, या सांसारिक समृद्धि कुछ भी नहीं दिखती, फिर तुम कैसे कह सकते हो कि तुम्हारे पास सब कुछ है?"

यही प्रश्न सामरी स्त्री ने यीशु से किया—"तेरे पास जल भरने का कोई साधन नहीं, कुआँ गहरा है, फिर तू जीवन का जल कैसे दे सकता है?"

यह हमें सिखाता है कि लोग अक्सर हमारी आत्मिक सच्चाई को नहीं देख पाते और केवल बाहरी चीजों के आधार पर हमें परखते हैं। लेकिन हमें उनके सवालों से विचलित हुए बिना परमेश्वर की सच्चाई को प्रचारित करना जारी रखना चाहिए।

क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिसने हमें यह कुआँ दिया और आप ही अपने संतान और अपने पशुओं समेत इसमें से पिया? (यूहन्ना 4:12)

सामरी स्त्री का यह सवाल वही सवाल है जो अक्सर लोग तब पूछते हैं जब उन्हें प्रभु यीशु की सेवा के लिए अपने घर, परिवार, समाज, दोस्ती-यारी आदि से दूर होने की स्थिति आती है।

लोग कहते हैं—"क्या यीशु मेरे माता-पिता से बड़ा है, जिन्होंने मुझे जन्म दिया और पालन-पोषण किया?"

"क्या वह मेरे रिश्तों से अधिक महत्वपूर्ण है?"

यीशु ने पहले ही इस तरह के सवालों को लेकर हमें सतर्क कर दिया है, क्योंकि उन्होंने खुद ऐसे सवालों का सामना किया।

इसलिए, जब भी हमें अपने सांसारिक संबंधों और प्रभु यीशु के बीच चुनाव करना हो, तो हमें याद रखना चाहिए कि संसार के रिश्ते अस्थायी हैं, लेकिन प्रभु में मिला उद्धार अनंतकाल के लिए है।

यीशु ने उसको उत्तर दिया—जो कोई यह जल पीएगा, वह फिर प्यासा होगा। (यूहन्ना 4:13)

ध्यान दें कि यीशु ने यह नहीं कहा कि वह याकूब से बड़ा है।

बल्कि उसने बस इतना बताया कि याकूब जो जल देता है, उसे पीने के बाद फिर से प्यास लगेगी।

हमें यीशु की इस बात से यह सीखना चाहिए कि जब हम किसी को मसीह के बारे में समझाएँ, तो यह न कहें कि "मसीह तुम्हारे परिवार से बड़ा है।"

बल्कि हमें यह समझाना चाहिए कि "यदि तुम इस संसार की चीजों में खुद को सीमित रखोगे, तो तुम्हारी प्यास कभी नहीं मिटेगी। लेकिन यदि तुम मसीह द्वारा दिया गया जल पीओगे, तो हमेशा के लिए तृप्त हो जाओगे।"

इस तरह हम बिना किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाए, उसे उद्धार की ओर मार्ग दिखा सकते हैं।

परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन् जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा। (यूहन्ना 4:14)

यीशु ने यहाँ साफ़-साफ़ कहा कि जो उसके दिए जल को पीएगा, वह अनन्त काल तक प्यासा न होगा, बल्कि वह जल उसमें एक सोते के समान उमड़ता रहेगा।

यह वही सोता है जो हमारे और आपके भीतर बह रहा है। यही कारण है कि हम हमेशा यह प्रयास करते हैं कि लोगों को भी यह जल पिलाएँ और बार-बार लगने वाली प्यास से छुटकारा दिलाएँ।

यह बार-बार लगने वाली प्यास और कुछ नहीं, बल्कि पाप है।

जब तक कोई संसार का जल पीता रहता है, तब तक वह बार-बार पाप करता रहता है।

लेकिन जब कोई एक बार यीशु का दिया हुआ जल पी लेता है, तो वह दोबारा पाप नहीं करता।

स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊँ और न जल भरने को इतनी दूर आऊँ। (यूहन्ना 4:15)

मेरे भाइयों और बहनों, यकीन मानिए, यह सामरी स्त्री एक बहुत अच्छी उदाहरण है उन लोगों की, जो आज के समय में हमसे कहती हैं, "पास्तर जी, ऐसी प्रार्थना कर दीजिए कि मेरी तबियत पूरी तरह से ठीक हो जाए और मुझे बार-बार इतनी दूर कलिसिया तक आना न पड़े।"

आपको कई बार ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ेगा, जहाँ आप अनन्तकाल तक जीवन पाने की बात कर रहे होंगे, मगर सामने वाला व्यक्ति केवल यह कहेगा, "यीशु से कहो कि मेरी यह यह तकलीफें दूर कर दे, ताकि मुझे यह यह सुविधाएँ मिल जाएँ।" लोग यीशु को चंगा करने वाला तो मान लेंगे, मगर वह यह नहीं मानेंगे कि वह वास्तव में परित्राणकर्ता और उद्धारकर्ता हैं। यही वजह है कि यीशु ने उस सामरी स्त्री से आगे जाकर वही सवाल पूछा, जो वह छिपाना चाहती थी। मगर यीशु का उत्तर उसे यह मानने पर मजबूर कर दिया कि यीशु एक आम इंसान बिल्कुल नहीं हैं।

यीशु ने उससे कहा, "जा, अपने पति को यहाँ बुला ला।" (यूहन्ना 4:16)

यीशु ने ऐसा क्यों कहा होगा? वह तो सामर्थी हैं, वह बिना उसके पति के भी उसे वह दे सकते थे जिसकी वह बात कर रहे थे। फिर उन्होंने यह प्रश्न क्यों किया?

दरअसल, सामरी स्त्री अभी तक यीशु की बातों को हल्के में ले रही थी और उनके वास्तविक सामर्थ्य से अनजान थी। लेकिन यीशु ने अपनी शक्ति दिखाने के लिए यह नहीं कहा कि "देखो, मैं सब कुछ जानता हूँ," बल्कि उन्होंने यह प्रश्न इसलिए किया ताकि वह स्त्री अपने पाप का एहसास करे। क्योंकि पाप के स्वीकार के बिना उद्धार असंभव है। और यीशु भली-भाँति जानते थे कि उस स्त्री ने क्या पाप किया है।

यीशु के इस कार्य से हमें यह सीखना चाहिए कि यदि हम किसी को उसकी गलतियों के बारे में बताते हैं, तो हमारा उद्देश्य यह नहीं होना चाहिए कि हम खुद को महान सिद्ध करें, बल्कि हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि वह व्यक्ति अपने किए गए पाप को महसूस करे, पश्चाताप करे और उससे निकलकर सही मार्ग पर आ सके।

स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं बिना पति की हूँ।" यीशु ने उससे कहा, "तू ठीक कहती है, 'मैं बिना पति की हूँ।' क्योंकि तू पाँच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं। यह तू ने सच ही कहा है।" (यूहन्ना 4:17 & 18)

ये दोनों ही वचन यह प्रकट करते हैं कि उस स्त्री का जीवन कैसा था और साथ ही, यीशु के अपार प्रेम का अद्भुत उदाहरण देते हैं। उन्होंने किसी को छोटा या बड़ा नहीं समझा—सभी उनके अपने हैं।

यह हमारे लिए एक महत्वपूर्ण सीख है कि हम न तो ऐसी स्त्रियों को तुच्छ समझें और न ही एक धार्मिक व्यक्ति से उनका कोई भेद करें। क्योंकि जब कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कितना भी पापी क्यों न हो, अपने पाप को स्वीकार करता है और मसीह के चरणों में आ जाता है, तो वह आत्मिक रूप से शुद्ध और धर्मी बन जाता है।

इसलिए हमें कोई अधिकार नहीं कि हम ऐसे लोगों पर उंगली उठाएँ, क्योंकि हमारे परमपिता ने भी ऐसा नहीं किया। बल्कि, हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम ऐसे लोगों को परित्राण (उद्धार) का मार्ग दिखाएँ, जिससे वे भी अनंत जीवन प्राप्त कर सकें।

स्त्री ने उससे कहा, "हे प्रभु, मुझे लगता है कि तू भविष्यद्वक्ता है। हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की, और तुम कहते हो कि वह जगह जहाँ आराधना करनी चाहिए यरूशलेम में है।" (यूहन्ना 4:19 & 20)

ये दोनों वचन उन लोगों की मानसिकता को प्रकट करते हैं जो यह तो मान लेते हैं कि यीशु परमेश्वर हैं, लेकिन उनके मन में यह सवाल भी उठता है कि जो पहले से चलता आ रहा है, उसका क्या होगा? हमारे पूजापाठ, मंदिर, मस्जिद या देवी-देवताओं का क्या होगा?

इस प्रकार के प्रश्न दिखाते हैं कि मनुष्य का हृदय अक्सर नए सत्य को स्वीकार करने में संकोच करता है, क्योंकि वह पुरानी परंपराओं, विश्वासों और रीति-रिवाजों से जुड़ा होता है। लेकिन यीशु हमें केवल परंपराओं से मुक्त करने नहीं आए, बल्कि हमें सत्य और अनंत जीवन का मार्ग दिखाने आए।

यह हमें यह सिखाता है कि परमेश्वर किसी स्थान या रीति से बंधा नहीं है। वह उन लोगों को खोजता है जो सच्चे हृदय से उसकी आराधना करें। इसलिए, हमें परंपराओं से अधिक सत्य को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि उद्धार केवल विश्वास, पश्चाताप और परमेश्वर की कृपा से संभव है, न कि बाहरी आडंबरों या धार्मिक स्थलों के माध्यम से।

यीशु ने उससे कहा, "हे नारी, मेरी बात का विश्वास कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे, न यरूशलेम में। (यूहन्ना 4:21)

यह वचन यह दर्शाता है कि जो आराधना की परंपरा चली आ रही थी, उसे यीशु ने यह कहकर समाप्त कर दिया कि अब कोई मंदिर, कोई मस्जिद या कोई विशिष्ट स्थान नहीं होगा जहाँ केवल वहीं जाकर पिता की आराधना की जाएगी।

यही कारण है कि यीशु ने उन विशाल इमारतों को भी गिरा दिया, जो परमेश्वर की आराधना के नाम पर डाकुओं की गुफा बन चुकी थीं। जब उन्होंने मंदिर में व्यापारियों और लेन-देन करने वालों को देखा, तो उन्होंने उन्हें बाहर निकालते हुए कहा, "मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा, पर तुमने इसे डाकुओं की गुफा बना दिया है।" (मत्ती 21:13)

इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की आराधना किसी भवन, परंपरा या बाहरी विधियों में नहीं, बल्कि हृदय की सच्चाई और आत्मा की भक्ति में निहित है। यीशु ने स्पष्ट कर दिया कि अब आराधना किसी स्थान या रीति से नहीं, बल्कि सीधे परमेश्वर से संबंध के आधार पर होगी।

तुम जिसे नहीं जानते, उसकी आराधना करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी आराधना करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। (यूहन्ना 4:22)

इस एक वचन में सब कुछ साफ़-साफ़ प्रकट होता है कि हम मसीही लोगों को अपनी आराधना पर इतना गर्व क्यों रहता है।

वजह यह है कि हम वास्तव में जानते हैं कि हम जिसकी आराधना करते हैं, वह कौन है। हमारे लिए आराधना कोई रीति-रिवाज या परंपरा मात्र नहीं है, बल्कि यह सत्य और आत्मा से परमेश्वर के साथ जीवंत संबंध है।

जबकि हमारे अन्य भाई-बहनों को इस सच्चाई का अभी एहसास नहीं हुआ है। वे अब भी आध्यात्मिक अंधकार में हैं और वही जल पी रहे हैं जिससे बार-बार प्यास लगती है। इसलिए, हमारा कर्तव्य है कि हम सत्य के इस जल को औरों तक पहुँचाएँ ताकि वे भी अंधकार से निकलकर जीवन के वास्तविक प्रकाश में आ सकें।

परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है। (यूहन्ना 4:23)

यीशु ने यह दोनों ही बातें क्यों कहीं— "परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है"?

अगर यीशु चाहते, तो वे सिर्फ़ एक बात कह सकते थे, लेकिन उन्होंने दोनों बातें कहीं, क्योंकि हर किसी के जीवन में एक ऐसा समय आता ही है जब वह यीशु मसीह की ओर फिरता है। यह सत्य है कि वह समय आएगा, परन्तु यह भी सत्य है कि वह समय अभी भी है।

यानी, उद्धार और सच्ची आराधना का अवसर भविष्य में कभी नहीं, बल्कि इसी समय, अभी है। हमें मसीह की ओर लौटने के लिए किसी विशेष समय की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि इसी क्षण हमें उसकी ओर फिरना चाहिए और सच्चे भक्त बनना चाहिए, जो पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे।

### **सच्चे भक्त बनना आवश्यक है**

ध्यान देने वाली बात यह भी है कि यीशु ने सिर्फ "भक्त" नहीं कहा, बल्कि "सच्चे भक्त" कहा।

इसका मतलब यह हुआ कि ऐसे भी लोग होंगे जो आराधना तो करेंगे, मगर उनकी आराधना में न तो सच्चाई होगी और न ही आत्मा की भक्ति। इसलिए हमें केवल आराधना करने वाले नहीं, बल्कि सच्चे आराधक बनना है, और इसका समय अभी ही है।

### **परमेश्वर दिखावे को नहीं, पवित्रता को चाहता है**

यीशु ने कहा, "क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढता है।"

इसका अर्थ है कि परमेश्वर को ऐसे लोग पसंद हैं जो सच्चाई और आत्मा से उसकी आराधना करते हैं, न कि वे जो केवल दिखावे के लिए धार्मिक कार्य करते हैं।

यीशु ने स्वयं कहा था कि बहुत से लोग उनके नाम में चंगाई करेंगे, भविष्यवाणी करेंगे और चमत्कार दिखाएँगे, लेकिन प्रभु उन्हें नहीं जानेंगे। (मत्ती 7:22-23)

परमेश्वर के लिए बाहरी कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण हृदय की पवित्रता और सच्चाई से की गई आराधना है।

इसीलिए यीशु ने कहा, "जब तुम प्रार्थना करो या उपवास रखो, तो अपने सिर पर तेल लगाओ और किसी को न दिखाओ, बल्कि अपने गुप्त में रहने वाले पिता के सामने करो।" (मत्ती 6:17-18)

### **निष्कर्ष**

1. उद्धार का समय भविष्य में नहीं, बल्कि अभी है।
2. हमें केवल आराधना करने वाले नहीं, बल्कि सच्चे आराधक बनना है।
3. परमेश्वर दिखावे को नहीं, बल्कि सच्चाई और आत्मा से की गई आराधना को पसंद करता है।
4. जो केवल नाम के लिए धार्मिक हैं, वे परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य नहीं होंगे।

इसलिए, हमें अभी इसी समय परमेश्वर के पास आना है, ताकि हम वह सच्चे आराधक बन सकें, जिन्हें पिता ढूँढ रहा है।

**परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।"**  
(यूहन्ना 4:24)

परमेश्वर आत्मा है, और यही कारण है कि वह किसी मूर्ति में बंधकर नहीं रहना चाहता।

मूर्ति तो हर किसी को दिखाई देती है—एक पापी को भी और एक धार्मिक व्यक्ति को भी। फिर, यदि केवल मूर्ति देखने से ही सब कुछ संभव होता, तो धार्मिक व्यक्ति को अपने धर्म होने का क्या ही फल मिलता?

सच्चाई यह है कि परमेश्वर का दर्शन केवल उन्हीं को होता है, जिन्होंने अपने पाप को स्वीकार करके मन परिवर्तन कर लिया है। यदि ऐसा न होता, तो पापी मनुष्य के पास अपने पाप से मन फेरने और पाप करने से डरने की कोई वजह ही न बचती।

## **सच्ची आराधना आत्मा और सच्चाई से होती है**

यही कारण है कि जो आत्मा में पूर्ण रूप से परिपूर्ण नहीं हैं, वे अधिक देर तक आराधना का दिखावा नहीं कर सकते। क्योंकि परमेश्वर की आराधना केवल आत्मा और सच्चाई से ही संभव है।

### **हमें क्या सीखना चाहिए?**

हमें भी यह सीखना चाहिए कि हमारी आराधना में आत्मा और सच्चाई हो।  
क्योंकि इनके बिना, अच्छे गीत और अच्छे वाद्ययंत्र बजाने का कोई मूल्य नहीं।  
सच्ची आराधना का मूल्य परमेश्वर की उपस्थिति में है, न कि बाहरी दिखावे में।

स्त्री ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।” (यूहन्ना 4:25)

यहाँ सामरी स्त्री कह रही है कि वह मसीह के बारे में जानती है, लेकिन फिर भी वह पाप में क्यों है?

कारण यह है, मेरे भाइयों और बहनों, कि वह केवल जानती है, लेकिन मानती नहीं।  
यही वजह है कि उसने घोर पाप किया और अब तक पाप के दलदल में फँसी हुई है।

### **जानना और मानना—दोनों में अंतर है**

हमारे जीवन में भी हमें बहुत से लोग मिलेंगे, जो यीशु मसीह को जानते हैं, लेकिन मानते नहीं।  
यही कारण है कि यदि आप उनकी ज़िंदगी में झाँक कर देखें, तो पाएँगे कि वे पाप से भरे जीवन में जी रहे हैं।

क्योंकि केवल ज्ञान पर्याप्त नहीं है—विश्वास और समर्पण आवश्यक है।

जैसा कि लिखा है:

"तू विश्वास करता है कि परमेश्वर एक ही है? तू अच्छा करता है; दुष्टात्माएँ भी विश्वास करके काँपती हैं।" (याकूब 2:19)

### **सामरी स्त्री का अज्ञान—अंधकार में जीवन**

यीशु तो स्वयं वहाँ खड़े हैं, लेकिन सामरी स्त्री उन्हें पहचानने के बजाय, उन्हीं के बारे में परिचय दे रही है और दावा कर रही है कि "वह आएगा!"

जबकि वह स्वयं उसके सामने खड़े हैं!

यह एक बड़ा उदाहरण है कि कैसे शैतान लोगों को आत्मिक रूप से अंधा कर सकता है, भले ही उनकी आँखें खुली हों।

### **हमें क्या सीखना चाहिए?**

1. सिर्फ जानना काफी नहीं, मानना और समर्पित होना आवश्यक है।
2. जो लोग मसीह को पहचानते हुए भी स्वीकार नहीं करते, वे आत्मिक अंधकार में जी रहे हैं।
3. शैतान लोगों को सत्य देखने से रोक सकता है, लेकिन जो सत्य को स्वीकार करता है, उसकी आँखें खुल जाती हैं।



इसलिए हमें केवल यीशु मसीह के बारे में जानने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि हमें उसे स्वीकार कर, अपने जीवन में उसका अनुसरण करना चाहिए।

यीशु ने उस से कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।" (यूहन्ना 4:26)

यीशु ने अपने बारे में खुद न कहकर, सामरी स्त्री के मुँह से कहलवाया—यही सच्चा परिचय है।

हमें इस बात से यह सीखना चाहिए कि हमें अपना परिचय तब तक नहीं देना चाहिए जब तक हमारा काम स्वयं हमारा परिचय न दे दे।

### **यीशु का तरीका—पहले प्रमाण, फिर परिचय**

शुरुआत में यीशु ने अपना परिचय नहीं दिया।

बल्कि, उन्होंने वह गुप्त बातें प्रकट कीं, जो सामरी स्त्री को चकित कर गईं।

तब स्त्री ने स्वयं कहा:

"आने वाला मसीह यह सब कहने वाला है!"

तभी यीशु ने कहा, "वह मैं हूँ।"

यदि यीशु ने पहले ही कह दिया होता कि "मैं मसीह हूँ," और उसके बाद उस स्त्री के पतियों के बारे में बताया होता, तो संभव था कि वह स्त्री यह सोचती कि यीशु केवल अपने दावे को साबित करने के लिए यह कह रहे हैं।

### **हमें क्या सीखना चाहिए?**

1. अपना परिचय खुद देने से बेहतर है कि हमारा कार्य हमारा परिचय दे।
2. विश्वास को स्थापित करने के लिए पहले प्रमाण देना आवश्यक है।
3. आध्यात्मिक जीवन में हमें इतना मजबूत रहना चाहिए कि लोग हमारे जीवन से ही पहचान लें कि हम मसीह के अनुयायी हैं।

इसलिए, हमें यीशु से यह सीखना चाहिए कि पहले अपने कर्मों से सच्चाई को प्रमाणित करें, फिर अपने परिचय को उजागर करें।

इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; तौभी किसी ने न पूछा, "तू क्या चाहता है?" या "किस लिये उससे बातें करता है?" (यूहन्ना 4:27)

### **यीशु तब भी कार्यरत थे, जब कोई देखने वाला नहीं था**

यीशु के चेले नगर में भोजन मोल लेने गए थे, इसलिए वह कुएँ पर अकेले थे।

लेकिन इस स्थिति में भी, उन्होंने सामरी स्त्री को सत्य सिखाने से पीछे नहीं हटे।

इससे हमें एक महत्वपूर्ण सीख मिलती है—

"सिर्फ तब प्रचार न करें जब लोग देख रहे हों, बल्कि तब भी करें जब कोई देखने वाला न हो।"

## यीशु की स्थिति—थके होने के बावजूद भी सेवा

वचन कहता है कि:

"यीशु मार्ग का थका हुआ कुएँ पर यों ही बैठ गया।"

इसका अर्थ यह है कि—

1. वह थके हुए थे।
2. वह सिर्फ विश्राम करने के लिए बैठे थे, प्रचार करने के उद्देश्य से नहीं।
3. उस समय कोई चले भी नहीं थे जो देख सकें कि वे क्या कर रहे हैं।

लेकिन जब वह सामरी स्त्री आई, तो यीशु ने बिना कुछ सोचे, अपने विश्राम को भुलाकर, उसे सत्य का संदेश देना शुरू कर दिया। उन्होंने यह नहीं सोचा कि:

- "अभी तो मैं थका हुआ हूँ।"
- "अभी चले भी नहीं हैं, कौन देखेगा कि मैं प्रचार कर रहा हूँ?"
- "मैं तो बस यों ही बैठा था, अब इसे सिखाने का मेरा कोई विचार नहीं था।"

## हमें क्या सीखना चाहिए?

1. थकान, परिस्थितियाँ, या देखने वाले लोगों की उपस्थिति से परे, हमें परमेश्वर के कार्य में सदा तत्पर रहना चाहिए।
2. अगर हमें कोई ऐसा व्यक्ति मिले जिसे प्रभु का परिचय देना चाहिए, तो हमें तुरंत उसे सुसमाचार सुनाना चाहिए।
3. हमारा कार्य इतना ईमानदार और स्पष्ट होना चाहिए कि लोग हमसे कोई प्रश्न किए बिना समझ जाएँ कि हम उद्धार की ही बातें कर रहे हैं।

## चले चकित तो हुए, पर प्रश्न नहीं किया

जब चले लौटे और उन्होंने देखा कि यीशु एक सामरी स्त्री से बात कर रहे हैं, तो वे आश्चर्यचकित हुए।

परंतु किसी ने भी यीशु से यह नहीं पूछा कि:

- "आप इस स्त्री से क्यों बात कर रहे हैं?"
- "आप उससे क्या चाहते हैं?"

क्यों?, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि अगर यीशु किसी से बात कर रहे हैं, तो वह बातचीत उद्धार से संबंधित ही होगी।

## अगर परमेश्वर को हम पर ऐसा ही विश्वास हो जाए तो?

यदि परमेश्वर को हम पर यह भरोसा हो जाए कि—

"जब यह किसी से बात कर रहा है, तो निश्चित रूप से यह आत्मिक आशीष देने वाली बात होगी,"

तो हम सच में धन्य होंगे!

हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए कि—जब लोग हमें किसी से बात करते देखें, तो उनके मन में यह संदेह न उठे कि हम कुछ गलत कर रहे हैं, बल्कि वे निश्चित रहें कि हम परमेश्वर की महिमा ही कर रहे हैं।

## तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी, (यूहन्ना 4:28)

### घड़ा छोड़कर क्यों चली गई सामरी स्त्री?

सामरी स्त्री ने घड़ा छोड़ दिया और जल लेने के लिए नहीं बल्कि येशु द्वारा दी गई सत्य और जीवन के जल को प्राप्त करने के बाद उसे अब उस जल की आवश्यकता नहीं महसूस हुई।

यह दिखाता है कि जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की सच्चाई को समझता है, तो वह उस साधारण संसारिक चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण चीज़ की ओर आकर्षित हो जाता है।

वह जान चुकी थी कि जो जल येशु ने उसे दिया, वह अनंतकाल तक उसकी प्यास को शांत करेगा, न कि जो जल वह लेकर आई थी।

येशु की बात ने उसे इस हद तक प्रभावित किया कि उसने बिना सोचे-समझे दूसरों से यह सत्य साझा करना शुरू कर दिया।

## येशु के वचनों का प्रभाव

वचन 39, 41 और 42 में हम देखते हैं कि सामरी स्त्री के कारण नगर में कई लोग उद्धार के मार्ग पर चले आए।

येशु के शब्दों ने उसे ऐसा प्रभावित किया कि उसने अपना कार्य शुरू किया और नगर में कई अन्य लोगों को भी उद्धार की ओर अग्रसर किया।

## येशु की निष्ठा और हमारे लिए सीख

यह सब हुआ, क्योंकि येशु ने अपना कार्य किया, जबकि वह थका हुआ था, और उसके चेले भी नहीं थे।

यह उस समय की योजना में नहीं था, और न ही उसने किसी संकीर्ण मानसिकता के कारण किसी अन्य व्यक्ति को नजरअंदाज किया, जिससे वह अपनी प्रतिष्ठा को खो सकता था।

येशु के प्रति उसका सत्य, ईमानदारी, और उसके कार्य के प्रति निष्ठा ही थी जिसने उसे इस मुश्किल समय में भी बिना किसी रुके अपना कार्य जारी रखने की प्रेरणा दी।

## हमें क्या सिखने की आवश्यकता है?

1. हमारे कार्य कभी भी किसी स्थिति या आराम के आधार पर न रुकें।
2. जब हमें दूसरों को उद्धार का मार्ग दिखाने का अवसर मिले, तो हमें इसे किसी भी परिस्थिति में नहीं छोड़ना चाहिए।
3. हमारे कार्यों में निष्ठा और सत्य का पालन करते हुए, हमें उन लोगों के लिए काम करना चाहिए जो परमेश्वर के सुसमाचार की आवश्यकता महसूस करते हैं।

## येशु का प्यार और हमारी निष्ठा

येशु स्वयं परमेश्वर होकर भी हमेशा अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान रहे, और हमें भी अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान रहना चाहिए। येशु का प्यार और उसकी दी गई प्रेरणा हमें यही सिखाती है कि ध्यान से अपनी निष्ठा और कर्तव्यों को निभाना चाहिए, चाहे स्थिति जैसी भी हो।

## धन्य हैं हमारे येशु और धन्य है उनका प्रेम

Led by the Holy Spirit, Guided by Faith and Scripture

Biblical Commentary by Sonu Kumar Saha

Date: 1<sup>st</sup> February 2025

Contact: sks.officeuse@gmail.com

---

I sincerely thank my respected Pastor, Rev. Sahadev Nanda, for teaching this topic so profoundly and clearly. His guidance has been a great blessing, enriching both my knowledge and faith. May God continue to bless him abundantly.

**With gratitude,**

Sonu Kumar Saha